शायद ही भर पाएंगे ये जख्म

गौरीकुंड में 250 दुकानें, लॉज, होटल बहा ले गई बाढ़

अमर उजाला ब्यूरो

रुद्रप्रयाग। 16-17 जून की सुबह जो जलजला आया, वह सब कुछ तबाह करते हुए अपने साथ ले गया। जो लोग खुशकिस्मत थे, वे पानी में बहने के बाद भी बच निकले। घटना ने ऐसे जख्म दिए हैं कि जिसको भरने में सालों लग जाएंगे।

11700 फीट की ऊंचाई पर बसा केदारनाथ धाम भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक हैं। गौरीकुंड, जंगलचट्टी, रामबाड़ा, घिनुरपाणी और गरुड़चट्टी धाम के मुख्य पड़ावों में हैं। केदारघाटी के लोगों की इससे आर्थिकी जुड़ी हुई है। गौरीकुंड में लगभग 200-250 दुकान, होटल, लॉज, रामबाड़ा, जंगल चट्टी में लगभग 60 कच्चे-पक्के भवन हैं। वहीं केदारनाथ में करीब 250 सरकारी-गैरसरकारी होटल-लॉज, दुकानें थी। अब हालत यह है कि केदारनाथ में चारों और गांधी सरोवर के फटने से आया मलबा पटा हुआ है। भवनों के अवशेष दिखाई दे रहे हैं। केदारनाथ मंदिर के चारों ओर पानी बह रहा है। कभी तीर्थयात्रियों और लोगों से गुलजार रहने वाले रामबाड़ा क्षेत्र का नामोनिशान मिट गया है। नदी का प्रवाह बाजार की ओर मुड गया है। जंगल चट्टी में भी मलबा ही मलबा दिखाई दे रहा है।

गौरीकुंड केदारनाथ यात्रा मार्ग का अंतिम मोटर मार्ग पड़ाव स्थल है। यहां मां गौरी का मंदिर और तप्त कुंड स्थित है। माना जाता है कि यहां माता पार्वती ने प्रथम ऋतु स्नान किया था। दो दिनों की बाढ़ के बाद यहां कुछ नहीं दिखाई दे रहा है। गौरीकुंड घोड़ा पड़ाव से लेकर गौरीकुंड मुख्य बाजार का नीचला हिस्सा मंदाकिनी नदी में समा गया है।